

डॉ० √धातु √ धातु √ सुप √ नामन एक० द्वि० बहु०

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० १०० १०००

क का कि की कु कू कैं के कै कौ को कौ कं कः कँ

अ आ / आ इ ई / ई उ ऊ / ऊ  
ऋ / ऋ ऋ / ऋ लृ / लृ लृ / लृ  
ऐ ए ऐ ओ / ओ ओ औ अं / अं अँ अः

क् क् म्  
क ख ग घ ङ / ङ  
च / च छ / छ ज झ ञ / ञ  
ट ठ ड ढ ण  
त थ द ध न  
प फ ब भ म  
य र ल व / व  
श ष स ह ळ / ळ  
क्ष / क्ष ज्ञ / ज्ञ / ज्ञ श्र

क ख ग घ ङ / ङ  
च छ ज झ ञ / ञ  
ट ठ ड ढ ण  
त थ द ध न  
प फ ब भ म  
य र ल व / व  
श ष स ह ळ / ळ  
क्ष / क्ष त्र ज्ञ / ज्ञ / ज्ञ श्र  
क ख ग घ ङ ज्ञ

क का कि की कु कू क  
स सा सि सी सु सू  
खृ खे खै खं खः खँ खँ  
डे डे डं डः डँ डँ  
ळ गृ गृ र्ग  
ऐ ओ ऐक्ट  
ऑफिस फ्रॅक्ट कॉल कोल फ्रॉल  
उँ ॐ ॐ ओम ॐ ॐ  
रामम रामं रामं रामँ

रामे रामम् रामौ रामाः

ॐ श्री गणेशाय नमः

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम् ।  
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ १ ॥  
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।  
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमंडितम् ॥ २ ॥  
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नर्तचरान्तकम् ।  
स्वलीलया जगत्रातुं आविर्भूतं अजं विभुम् ॥ ३ ॥  
राम , राम । राम - राम ! (राम) 'राम'  
"राम" राम : राम ; राम: राम: राम ?  
राम् राम राम राम् राम राम राम् राम राम